शमशेरः प्रकृति, प्रेम और सौन्दर्य की कवितायें

डॉ0 सरिता*

शमशेर को ''विशुद्ध सौन्दर्य का कवि'' कहा जाता है। वे नयी कविता के कवियों में सबसे कठिन कवि हैं। पाठकों और आलोचकों के लिये वे दुरूह कवि हैं। विजयदेव नारायण साही ने शमशेर के बारे में लिखा है–''हिन्दी में शमशेर से ज्यादा दुरूह कवितायें किसी और ने नहीं लिखा है।'' उनके कविता की यही दुरूहता उनकों ''कवियों का कवि'' बनाती है। शमशेर की कविता को समझने के लिये सम्पूर्ण हिन्दी कविता को समझना अनिवार्य है। हिन्दी ही नहीं बल्कि उसके साथ–साथ उर्दू, अरबी, फारसी, अंग्रेजी एवं फ्रेंच कविता साहित्य को भी समझना जरूरी है। वे प्रयोगवादी कवि हैं। मार्क्सवाद में उनकी अहर्निश श्रद्धा हैं। साम्यवाद को पोषित करतीं उनकी ढेरों कवितायें हैं परन्तु प्रकृति प्रेम व सौन्दर्य की उनकी कवितायें आकाशीय ऊचाईयाँ छूती नजर आती हैं। साही जी लिखते हैं– तात्विक रूप में षमशेर की काव्युनभूति सौन्दर्य की ही अनुभूति है। आज तक हिन्दी में विशुद्ध सौन्दर्य का कवि यदि कोई हुआ है तो वह शमशेर है। साही जी का कथन शमशेर की सौन्दर्यप्रियता, प्रकृतिप्रियता की सच्चाई का अनुशीलन है। रंग और राग से सनी यह कविता शमशेर की सौन्दर्य के प्रति संवेदना को व्यक्त करती है–

हाँ तेरी हँसी को मैं,
ऊषा की भाप से निर्मित
गुलाब की बिखरती पंखुड़ियाँ की समझता था।
मगर वह मेरी ह्रदय ही कभी छील डालेगी
मेरा अजानपन और तेरा सौन्दर्य है।

रंग–राग–गंध–स्पर्श तो जैसे उनकी कविता से अर्थ पाते हैं। रंगों के प्रति उनकी संवेदना उनके गहरे प्रकषति प्रेम तथा सौन्दर्य प्रियता को जैसे निखार देती हैं। ''वह सलोना जिस्म'' नामक कविता में शमशेर की रंग संवेदना अपूर्व है–

शाम का बहता हुआ दरिया कहाँ ठहरा
साँवली पलकें नशीली नींद में जैसे झुकें
चाँद से भरी भारी बदलियाँ है
ख्वाब में गीत पेंग लेते हैं
प्रेम की गुइयाँ झुलाती हैं उन्हें
वह सलोना जिस्म
उसकी अधमुखी अँगड़ाइयाँ हैं
वह सुबह की चोट है हर पंखुड़ी पर

शमशेर की कविता उनकी सौन्दर्य चेतना से अनुप्राणित है जो एक नये अध्याय का सृजन करती है। शमशेर ने स्त्री सौन्दर्य, प्रेम और प्रकृति के लिये उपयोग में आने वाले सभी पुराने प्रतिमानों को बदलकर नये प्रतिमान स्थापित किये। शमशेर का मानना है कि कला में एक प्रकार का नशा होता है। उनके अनुसार विभिन्न अंगों में संतुलन ही कविता को कलात्मक ऊचाईयाँ देता है। उनकी कवितायें प्रकृति के कलात्मक चित्रों को स्पष्टतः उपस्थित कर देती हैं–

सवन की उनहार
आँगन पार
मधु बरसे, हुन बरसे
बरसे स्वाति धार
आँगन पार

और इस प्रकार शमशेर अमूर्त चित्रों की आत्मा को दिलों दिमाग में उकेरते हैं और कविता सीधे पाठकों के मन मस्तिष्क में छप जाती है। शमशेर का काव्य अनुभूतियों का काव्य है। सूक्ष्म और घनीभूत स्मृतियाँ उनके काव्य का मूल अंग हैं। शमशेर की कविता से उठने वाला स्वर बड़ा ही दर्दीला है। संसारिक विषमताओं और गहरी मानवीय करूणा से सनी उनके प्रेम और सौन्दर्य की कवितायें, प्रेम की बेचैनी और पीड़ा को धीरे–धीरे छेड़ती हैं। प्रेम को समर्पित उनका व्यक्तित्व, उस पर सब कुछ निछावर कर देने की उद्दाम लालसा से अनुप्राणित है। प्रेम का आवेग जो मिलन के मधु से आप्यायित है के लिये वे कहते हैं–

मुझे प्यास के पहाड़ों पर लिटा दो जहाँ मैं
एक झरने की तरह तड़प रहा हूँ।

प्रेम की यह तड़प, तड़प की यह तीव्रता शमशेर के सिवा और कहाँ? प्रेम पर लुट जाने का, मिट जाने का यह प्यारा रोमॉटिक अन्दाज सिर्फ गहरी और गहरी अनुभूतियों से ही उत्पन्न होता है, इसलिए शमशेर गहरी अनुभूति के कवि हैं।

प्रेमी अपने प्रेमिका के प्रति आसक्स है और अपने प्रेम का प्रतिदान प्रेमिका से चाहता है। वह प्रेम का भूखा है। उसका प्रेम जिस प्रेम की आकांक्षा करता है उसमें बराबरी से तनिक भी कम की गुंजाइश नहीं हैं। वे कहते हैं–

तुम मुझसे प्रेम करो
जैसे मछलियाँ लहरों से करती हैं

***आर्य महिला पी0जी0 कॉलेज चेतगंज, वाराणसी।**

तुम मुझसे प्रेम करो
जैसे मैं तुमसे करता हूँ

प्रेम पाने की यह उत्कट अभिलाषा, अजीब उत्कंठा शमशेर की शमशेरियत से लबालब है–

मुझको सूरज की किरनों में जलने दो
ताकि उसकी आँच और लपट में तुम
फव्वारे की तरह नाचो
मुझको जंगली फूलों की तरह
ओस से टपकने दो
ताकि उसकी दबी हुई खूशबू से
अपनी पलकों की उनींदी जलने को तुम भिंगो सको
मुमकिन हो तो.....

प्रेम की ऐसी कोमलता और प्रेमी की ऐसी मासूमियत 'मुमकिन हो तो' पर कौन न मिट जाए? अपने प्रेमी की इस विनम्रता पर कौन प्रेमिका है जो फिदा न हो जाए। शमशेर इसी प्रेम में निहित सौन्दर्य और सौन्दर्य आप्लावित प्रेम के लिये जाने जाते हैं। प्रेम से अतृप्ति और प्रेम में डूब जाने की तीव्र लालसा जिससे सारी कायनात की पोर–पोर, जर्रा–जर्रा प्रेममय होकर नाच उठे, शमशेर के कविताओं की विशिष्टता हैं। शमशेर के सिवा कौन प्यार की इतनी ऊचाईयाँ छू सकता है–

कहाँ किया मैंने प्रेम
अभी जब करूँगा प्रेम
पिघल उठेंगे
युगों के भूधर
उफन उठेंगे
सात सागर

शमशेर का प्रेम गहरे दर्द में बिंध जाने का प्रेम है। सौन्दर्य में खो जाने का भाव शमशेर के कविता की विशेषता है। प्रेम और सौन्दर्य की ये कवितायें तीन तरह के भावों को व्यक्त करती हैं। कुछ कवितायें ऐसी हैं जिनमें उनकी पत्नी की रूग्ण छवि को व्यक्त करती गहरे क्षोभ और पीड़ा की अभिव्यंजना है। दूसरे तरह की वे कवितायें हैं जिनमें एक प्रेमी की अपने प्रेमिका पर मर मिटने की उससे ह्रदय की गहराइयों तक जुड़ने की और उसके उपेक्षा का अंकन है और तीसरे तरह की कवितायें वे हें जिनमें उनके प्रेम की वह अभिव्यक्ति है जो सारी सीमाओं वर्जनाओं को तोड़कर नारी शरीर के अप्रतिम सौन्दर्य के तीव्र आकर्षण से ओतप्रोत हैं। शमशेर की खासियत यह है कि नारी सौन्दर्य को उभारती उनकी कवितायें नवीन प्रयोगों,

नवीन चेतना से अनुप्रातिण है। उन्होनें अपनी मौलिकता के साथ कहीं भी, किसी भी तरह का कोई समझौता स्वीकार नहीं किया है। प्राकृतिक सौन्दर्य की कविताओं में भी उन्होंने अपनी तकनीकी विशेषता को बनाये रखा है। उनकी कवितायें नवीन प्रयोग के साथ अनुभूति की पारदर्शिता से सनी हुई हैं। यथार्थ का चित्रण, अभिव्यक्ति की नई टेक्निक और कलात्मकता की प्रभावशाली प्रस्तुति उनकी इस कविता में दिखाई पड़ती है–

प्रात नभ या बहुत नीला शंख
भोर का नभ
राख से लीपा हुआ चौका
अभी गीला पड़ा है
बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से
कि जैसे धुल गयी हो
स्लेट पर या लाल खड़िया चाक मल दी हो किसी ने
नील जल में या किसी की
गौर झिलमिल देह जैसे हिल रही हो और
जादू टूटा है इस ऊषा का अब
सूर्योदय हो रहा है ।

शमशेर की यह कविता उनकी कलात्मकता को दर्शाती है। यहाँ कविता गतिशील है जिसमें ऊषा के आरम्भ से लेकर सूर्योदय होने तक की सम्पूर्ण पटलित श्रृंखला को स्पष्ट बिम्बों और प्रतिमानों के माध्यम से व्यक्त किया गया है। एक–एक शब्द उनके शब्द विमर्श, उनकी सटीक शब्द–शिल्पता, अद्भुत कल्पना शीलता को समेटे हुए ऊषा से लेकर सूर्योदय तक का यह विलक्षण वर्णन, रंगों को समझने का और फिर उन्हें ज्यों का त्यों कागज पर उतार देने का जो हुनर शमशेर में दिखाई पड़ता है संभवतः उनके समकालीनों में नहीं दिखाई पड़ता है। प्रातः का नभ जो कि गहरे नीले शंख जैसा था धीरे–धीरे सूर्योदय के साथ स्लेटी रंग का हो चुका है और सूर्य की रश्मियाँ इस रंग पर ऐसी छटा बिखेरती है जैसे कि किसी ने लाल खड़िया चला दी हो। प्रातः होने के साथ धीरे–धीरे मंद–मंद मंथर से तीव्र होती जन जीवन से उठने वाली सुमधुर ध्वनियाँ भी इस कविता में प्रतिध्वनित होती हैं। शमशेर के पास अद्भुत सौन्दर्य विवेक होने के साथ–साथ शब्द नये रूप में प्रयुक्त होकर कविता को नवीनता एवं कलात्मकता दोनों प्रदान करते हैं। उनका शब्द–कोष इतना प्रचुर है कि पाठक सहसा अवाक् रह जाता है। भाषा का प्रवाह, भाषा की निरंतरता और उसका सौन्दर्यीकरण शमशेर की कलात्मक तकनीकि है। शमशेर के लिये पुरुषेत्तम अग्रवाल ने लिखा है– ''संवेदना का परिष्कार ओर शब्द

का संस्कार यह भी कविता की सामाजिक उपयोगिता के ही पहलू हैं और शमशेर की कविता हमारे समय के बारे में हमें अत्यधिक संवेदनशील बनाती है। वाच्य और वाचक के संबंध को अधिक वास्तविक बनाती है। इस मायने में उनकी उपयोगिता बड़ी गहरी है। संक्षिप्तता के प्रति उनका पूर्वाग्रह कविता में संश्लिष्ट समग्रता के प्रति उनका पूर्वाग्रह का परिणाम है। कविता में शमशेर का अघोषित आदर्श हैः अरथ अमित आखर अति थोरे।''

शमशेर की कविताओं को पढ़ते समय आपके समक्ष स्पष्टतः चित्र उपस्थित होते चलते चले जाते हैं और कविता खत्म होती जा रही रही होती है। उनकी कवितायें जैसे सचित्र व्याख्या हुआ करती हैं–

चिकनी चाँदी सी माटी
वह देह धूम में गीली
लेटी है हँसती सी

कविता न हो मानों हल्कें हाथों से चित्र ही खींच दिया गया हो धुँधला सा–

एक नीला आइना
बेठोस सी यह चाँदनी
और अन्दर चल रहा हूँ मैं
उसी के महातत्व के मौन में

शमशेर की सौन्दर्य दृष्टि, शमशेर का सौन्दर्य विवेक है कि जो दृश्यमान है वह भी और जो अनुभूतिगत है वह भी एक साथ अबाध गति से प्रवाहित करने का एक साथ माद्दा रखता है। उनकी कवितायें उनके सौन्दर्य प्रेमी मन से उठने वाली हिलोरें हैं, जिनमें मानव जीवन और प्रकृति की एकात्मकता लगातार पर्त्त दर पर्त्त बल खाती हैं। उनकी सौन्दर्यानुभूति उनके संवेदना के संस्पर्श को पाकर और दीप्त हो उठती हैं। प्रकृति अपने नैसर्गिक रूप में उल्लासमयी सुन्दरता में वर्णित हो उठती है–

चाँदनी की उँगलियाँ चंचल
कोशिये से बुन रही थी चपल
फेन झालर बेल मानों
इसी प्रकार–
मर्म उघारे चमक रहे हैं तारे खिसक रही है रात
असंख्य आँख पसारे

शमशेर की अनुभूति की जो गहराई है उसे उन्होंने शब्द दे दिये हैं। उनका निज वास्तव में उनकी कविताओं के माध्यम से सार्वजनिक रूप में परिणत हो जाता है। उनकी अनुभूति जो बिम्ब रचना करने में सक्षम है उसी की होकर उसी में समविष्ट हो जाती हैं–

ये लहरें घेर लेती हैं
ये लहरें
उभरकर अर्द्ध द्वितीया
टूट जाता है....
अन्तरिक्ष में
ठहरा एक
दीर्घ सममतल मौन

लहरें जो चाँद के द्वितीया रूप को घेर लेती है, उभर कर टूट जाता है और अन्तरिक्ष में एक दीर्घ सममतल मौन ठहर जाता है। यह ठहराव मानव मन के भाव का दुर्लभतम उदाहरण है। शमशेर अपनी कविता में उन प्रमुख भावों को व्यक्त करते हैं और शेष को पाठक की कल्पनाशीलता को समर्पित कर देते हैं। मुक्तिबोध के शब्दों में–''शमशेर की मूल मनोवृत्ति एक इम्प्रेशनिस्ट चित्रकार की है''।

इम्प्रेशनिस्ट चित्रकार अपने चित्र में केवल उन अंशों को स्थान देगा जो उसके संवेदना ज्ञान की दृष्टि से प्रभावपूर्ण संकेत शक्ति रखते हैं वह दृश्य चित्र में उन्हीं अंशों को स्थान देता है कि जो उसके संवेदना ज्ञान की दृष्टि से उस दृश्य का अत्यन्त महत्वपूर्ण, प्रगाढ़, प्रभावपूर्ण अंग है। केवल कुछ ही ब्रशेश में वह अपना काम करके दृश्य के शेष अंशों को दर्शक की कल्पना के भरोसे छोड़ देता है। दूसरे शब्दों में इम्प्रेशनिस्ट चित्रकार दृश्य के सर्वाधिक संवेदनागत करने वाले अंशों को प्रस्तुत करेगा और यह मानकर चलेगा कि यदि यह संवेदनाघात दर्शक के ह्रदय में पहुँच गया तो दर्शक अचित्रित शेष अंशों को अपने सष्जनशील कल्पना द्वारा भर लेगा।''

प्रेम व सौन्दर्य की जो कवितायें शमशेर ने लिखी हैं वे उनका मानवीय व सामाजिक चैतन्यता की ही हामी हैं। प्रेम व सौन्दर्य शमशेर की कविताओं में जैसे घुले मिले हैं, एक दूसरे के पर्याय जैसे। प्रेम की अनुभूति भी उनकी ऐन्द्रिकता और कलात्मकता को समर्पित है। यथार्थ से शुरु होने वाला उनका प्रकृति प्रेम प्रकृति की कोमलता के अहसास के साथ आगे बढ़ता है और अन्त में प्रेमी के मिलन की उत्कट अभिलाषा से सम्पूरित हो उससे एक हो जाने का आह्वान करता हैं–

मोटी धुली लॉन की दूब
साफ मखमल की कालीन
ठंडी धुली सुनहरी धूप
हल्की मीठी या सा दिन
मीठी चुस्की, सी बातें
मुलायम बाँहों सा अपनाव
पलकों पर हौले हौले

तुम्हारे फूल से पाँव
मानो भूलकर पड़ते
हृदय के सपनों पर मेरे
अकेला हूँ आओ

शमशेर के लिये प्रेम ही सृजन के मूल में है, अगर प्रेम न हो तो जीवन का क्या अर्थ? जीवन की समस्त अर्थवत्ता इसी प्रेम से ही पनपी हुयी है। प्रेम पीड़ा की अनुभूति में है। शमशेर प्रेमी हैं और उनका प्रेम हवा में नहीं है। उसकी ठोस पृष्ठभूमि है। उनके प्रेम में स्त्री–पुरुष का भी प्रेम है जिसमें देह केन्द्र में है। प्रेम के दुर्लभ अनुभवों को उन्होंने चित्रों में ढाल दिया है–

थरथराता रहा जैसे बेंत मेरा काय.....
कितनी देर तक–आपादमस्तक
एक पीपल पात मैं थर थर
काँपती काया शिराओं भरी
झनझन देर तक बजती रही
और समस्त वातावरण
मानो झंझावात ऐसा क्षण वह आपात
स्थिति का

शमशेर कविता के अर्थ को परत दर परत उघारते जाते हैं। वे सौन्दर्य के ऐसे कवि हैं जिनकी कवितायें हमारे सामने आती है, तो ऐसा लगता है मानों इसका अहसास पहली बार हो रहा हो परन्तु यदि उसका अर्थ सामने न आये तो जैसे कमी का अहसास होता है अशोक बाजपेयी के शब्दों में–''शमशेर कालातीत के कवि हैं। उनकी काँपती सी आवाज दुनियाँ की ऐसी सिक्तें दिखाती है जिनके होने का पता पहली बार जैसे उससे ही चलता है पर जिन्हें जाने बिना हमारी दुनियाँ अधूरी और अधसमझी ही रह जाती है।'' शमशेर कविता की रचना भूमि पर ऐसे हस्ताक्षर है जो हमेशा अपने सौन्दर्यप्रियता, प्रकृतिप्रियता और प्रेम की आकुलता को अनुभूति की गहराइयों से व्यक्त करने के लिये जाने जाते रहेंगे। उनका शिल्प–सामर्थ्य उनकी वाक् भाषा में निहित है जो पाठकों के लिये दुरूह तो है लेकिन अनुभव के धरातल पर सीधे सम्प्रेषणीय है।

<u>संदर्भः–</u>

1. आलोचना– सहस्त्राब्दी अंक– 40 'शमशेर बहादुर सिंह पर केन्द्रित'
2. शमशेर बहादुर सिंह – ''प्रतिनिधि कवितायें'', राजकमल पेपर बैक्स, नई दिल्ली।

3. 'शमशेर' (राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली): शमशेर की काव्यानुभूति की बनावटः विजय देव नारायण साही।
4. मुक्तिबोध रचनावली (राजकमल प्रकाशन) खण्ड– 5 में संकलित नामवर सिंह जी का लेख 'शमशेरः मेरी दृष्टि में'
5. प्रतिनिधि कवितायेंः नामवर सिंह
6. शमशेर : कुछ और गद्य रचनायें